मधुबन ओम् शान्ति अंक 285 अप्रैल 2016

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(09-03-16)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा परमात्म प्यार में समाने वाले, बापदादा के आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार, संगमयुगी महायोगी, महातपस्वी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सभी ने शिव भोलानाथ बाबा की हीरे तुल्य त्रिमूर्ति शिवजयन्ती खूब धूमधाम से मनाई होगी। इस अवसर पर भारत में तो चारों ओर सेवाओं की बहुत अच्छी धूम मचती है। कहीं मेले, कहीं प्रदर्शनियां, प्रभातफेरी, धर्म सम्मेलन आदि द्वारा हजारों, लाखों आत्माओं को शिव अवतरण का दिव्य सन्देश मिल जाता है। यह शिव जयन्ती का त्योहार भी कितना न्यारा प्यारा यादगार है, जब बच्चे बाप को बर्थ डे की बधाईयां देते और बाप बच्चों को अलौकिक बर्थ डे की बधाईयां देते। इस बार मधुबन में चारों ओर से डबल विदेशी बच्चों की भी बहुत अच्छी रिमझिम रही, ऊपर ज्ञान सरोवर और पाण्डव भवन दोनों स्थान फुल भरे हुए थे। सभी भिन्न-भिन्न स्थानों पर शिवबाबा का ध्वज लहराते, खुशियां मनाते, ज्ञान योग से अपनी झोली भरते रहे।

देखो, बाबा अव्यक्त होकरके भी कितने अच्छे इशारे दे रहा है, बाबा कहे बच्चे संगमयुग डायमण्ड युग है, इस युग में ही तुम्हें सर्व प्राप्तियां होती हैं। स्वयं भगवान अपने ओरीज्नल बच्चों से मिलता है। यह संगम ही महायोगी बनने का समय है। ऐसे अमूल्य समय में एक तो सदा ध्यान रहे कि हमें अन्तर्मुखी होकर रहना है। कहा जाता अन्तर्मुखी सदा सुखी। बाह्यमुखता में आकर परचिंतन, परदर्शन नहीं करना है, स्वचिंतन करते हुए बाप समान मास्टर दु:ख हर्ता सुख दाता बनना है। दूसरा - डायरेक्ट भगवान ने भाग्य बनाने की श्रेष्ठ कलम हम सबके हाथों में दी है। तो उस श्रेष्ठ कर्म रूपी कलम से ऊंचे से ऊंचा भाग्य बनाते चलो। इस संगमयुग पर जो मीठे बाबा की यादों में रहने के पुरुषार्थ से खुशी मिल रही है, लगता है यही रुह के लिये खज़ाना भी है तो खुराक भी है। बाबा भी हम बच्चों को देख कितना खुश होता है और हम भी बाबा को देख बहुत-बहुत खुश होते हैं। कल तो बाबा हम बच्चों को देख कितना खुश हो रहा था। हम भी दिल से कहते वाह बाबा वाह! और बाबा भी कहता वाह बच्चे वाह! बाकी कोई भी बात सामने आये तो लगाओ बिन्दी इससे एक मिनट में दस बातें अच्छी हो जायेंगी। बिन्दी लगाने में कोई मेहनत भी नहीं है। शान्ति, सच्चाई और प्रेम से काम लो तो आपस में व्यवहार भी अच्छा हो जाता है।

फिर हम जितना एकाग्रचित रहते हैं उतना बाबा से स्नेह खींच सकते हैं। न सिर्फ स्नेह लेकिन अतीन्द्रिय सुख का अनुभव होने लगता है। बाबा का निज़ ज्ञान अतीन्द्रिय सुख में रहने के लिये बहुत मदद करता है। उसमें जरा भी अपने नाम मान शान का ज्ञान नहीं है। बाबा जो पढ़ाता है उसी के चिंतन, मनन, मंथन में मन वा चित रहता है इसलिए बड़ा मजा आता है। जो करे कराये आपेही आप, वह करनकरावनहार करता भी है, कराता भी है। ऐसे नहीं तन से तो मैं तन्दरूस्त हूँ। तन का कनेक्शन मन से हैं, मन का कनेक्शन तन से हैं। धन की तो मेरे से बात नहीं करो, बाबा जाने यज्ञ जाने, देने वाला जाने वो जाने। सदा ऐसी निश्चिंत स्थिति में रहना बाबा ने सिखाया है। बोलो, हमारे मीठे मीठे भाई बहिनें ऐसे ही रहते हो ना!

अच्छा -

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"विधि द्वारा सिद्धि स्वरूप बनो"

1) आत्मिक दृष्टि में रहने का अभ्यास करते रहो तो इस विधि से संकल्प भी सिद्ध होने लगेंगे। वहाँ है रिद्धि सिद्धि और यहाँ है विधि से सिद्धि। सिर्फ शब्दों का अन्तर है। वह रिद्धि सिद्धि है अल्पकाल, और यह याद की विधि से संकल्पों और कर्मों की सिद्धि है अविनाशी। जैसे वह रिद्धि सिद्धि यूज़ करते हैं ऐसे आप याद की विधि से संकल्पों और कर्मों की सिद्धि प्राप्त करो।

2) आपके पुरुषार्थ का लक्ष्य है–सिद्धि को पाना। यथार्थ है विधि और सिद्धि लेकिन लोग विधि से सिद्धि प्राप्त करने के बजाए रिद्धि-सिद्धि में चले गये हैं। यदि आप यथार्थ विधि-पूर्वक संकल्प करते हो तो सिद्धि जरुर होती है। अगर विधि ठीक नहीं है तो सिद्धि भी नहीं है।

3) अब सेवा का ऐसा शक्तिशाली चक्र चलाओ जो सर्व आत्मायें आप पूर्वजों को पहचानकर प्राप्ति के अधिकार को प्राप्त कर लें। कुछ सुना, अच्छा सुना, इसके बदले, कुछ मिला ऐसी अनुभूति करें। सुनाते अच्छा हैं नहीं, बनाते अच्छा हैं। कम खर्चा, कम शक्ति, कम समय इसी विधि से सिद्धि स्वरुप बनो।

4) अपने को निमित्त समझकर चलना, यह उड़ती कला का साधन है। इसी विधि द्वारा सदा सिद्धि को पाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें बनो। निमित्त बनना, यह एक लिफ्ट है, जिसके द्वारा सेकण्ड में पहुँचने वाले उड़ती कला वाले हुए। चढ़ती कला वाले, हिलने वाले नहीं लेकिन हिलने से बचाने वाले। आग की सेक में आने वाले नहीं लेकिन आग बुझाने वाले। तो निमित्त भाव सर्व फल की प्राप्ति स्वत: कराता है।

5) अभी रहा हुआ थोड़ा-सा समय निरन्तर योगी, निरन्तर सेवाधारी, निरन्तर साक्षात्कार स्वरुप, निरन्तर साक्षात् बाप समान, इस विधि से सिद्धि को प्राप्त करो। सदा लाइट (हल्के) रहकर लाइट (प्रकाश) का ताज धारण करो। आपके कर्म से, बोल से रूहानी नशा और निश्चिन्तपन के चिन्ह अनुभव हों। निश्चित विजयी का नशा और निश्चिन्त स्थिति - यह है बाप के दिलतख्तनशीन आत्मा की निशानी।

6) जैसे ब्रह्मा बाप ने एक सेकण्ड में श्रेष्ठ मत प्रमाण हर कदम उठाया। बाप का ईशारा और ब्रह्मा बाप का कर्म वा कदम। श्रीमत प्रमाण तन को भी समर्पण किया, मन को भी सदा मन्मनाभव की विधि से सिद्धि स्वरुप बनाया, ऐसे फालो फादर करो।

7) मनमनाभव की विधि से मन अर्थात हर संकल्प सफलता स्वरूप बने, धन भी भविष्य की चिंता छोड़ निश्चिन्त बन समर्पित करके पदमगुणा भाग्य जमा करो, लौकिक सम्बन्ध को अलौकिक में परिवर्तन करो। मैं-पन की बुद्धि, अभिमान की बुद्धि भी समर्पित करो तब तन, मन, बुद्धि निर्मल, शीतल और सुखदाई बनें, यही है विधि से सिद्धि प्राप्त करना।

8) कर्मातीत का अर्थ है - सर्व प्रकार के हद के स्वभाव संस्कार से अतीत अर्थात् न्यारा। हद है बन्धन, बेहद है निर्बन्धन, तो सदा हदों को छोड़ बेहद में रहो, इसी विधि से सिद्धि को प्राप्त करते चलो।

9) अनेक मेरे-मेरे को एक "मेरा बाबा" में समा दो। एक को याद करना सहज है, इस एक मेरे में सब-कुछ आ जाता है। 'मेरा' कभी भूलता नहीं। "मेरा बाबा" कहा – तो योग शक्तिशाली हो जाता है और मेरा सम्बन्ध, मेरा पदार्थ–यह "अनेक मेरा" याद आया अर्थात् योग कमजोर हो गया। तो इस सहज विधि से पुरुषार्थ में वृद्धि करो अर्थात् सिद्धि स्वरूप बनो।

10) कोई भी साधन निमित्त मात्र हैं, साधना निर्माण का आधार है इसलिए साधन को महत्व नहीं दो, साधना को महत्व दो। सदा यही समझो कि मैं सिद्धि स्वरूप हूँ न कि साधन स्वरूप। साधना सिद्धि को अवश्य प्राप्त करायेगी। साधनों की आकर्षण में सिद्धि स्वरूप को नहीं भूल जाओ।

11) हर लौकिक चीज़ को देख, लौकिक बातों को सुन, लौकिक दृश्य को देख, लौकिक को अलौकिक में परिवर्तन करो अर्थात् ज्ञान-स्वरूप हो हर बात से ज्ञान उठाओ। तो हर बात में सिद्धि मिलती रहेगी।

12) जैसे बाप सदा सिद्धि स्वरूप है अर्थात् सिद्धि को प्राप्त है ही। ऐसे बाप-समान मस्तकमणि भी सर्व सिद्धि रूप हैं। जो बाप की महिमा है वह सर्व महिमा के योग्य अर्थात् सर्व योग्यताओं का सम्पन्न स्वरूप है। जैसे नॉलेज का प्रभाव है ऐसे योग के सिद्धि स्वरूप का प्रभाव हो, वह तब होगा जब आप अनुभव के सागर के तले में जायेंगे। रोज़ कोई न कोई नया अनुभव करो।

13) सिद्धि स्वरूप बनने के लिए याद की यात्रा पर अटेंशन दो। सेवा करते हुए भी याद में डूबे रहो। जैसे सेवाधारी अच्छे हो, यह प्रभाव है ऐसे निरन्तर योगी हैं, वह स्टेज पर आये। इसकी इन्वेन्शन निकालने की धुन में लगो। जो किसी ने नहीं किया है, वह मैं करूं– ऐसी याद की यात्रा के अनुभवों की रेस करो।

14) अभी आप पवित्र आत्मायें सदा सिद्धि स्वरूप हो, सदा की प्राप्ति कराने वाले हो सिर्फ चमत्कार दिखाने वाले नहीं लेकिन चमकती हुई ज्योति स्वरूप बनाने वाले हो, अविनाशी भाग्य का चमकता हुआ सितारा बनाने वाले हो, इसलिए अन्त में सभी आप पवित्र आत्माओं के पास ही अंचली लेने आयेंगे। इसके लिए अभी से सुख-शान्ति की जननी पवित्र आत्मायें बनो। दुआ का स्टॉक जमा करो तब अन्त में सबको अंचली दे सकेंगे।

15) सदा सन्तुष्ट मणि अर्थात् सिद्धि स्वरूप तपस्वीमूर्त बनो। आपके पास अल्पकाल की सिद्धियां नहीं हैं, यह अविनाशी और रुहानी सिद्धियां हैं। सिर्फ सत्यता की हिम्मत से विश्वासपात्र बनो। सत्य को कभी सिद्ध नहीं किया जाता, सत्य स्वयं में ही सिद्ध है इसलिए सिद्ध नहीं करो लेकिन सिद्धि स्वरूप बन जाओ।

16) समय की गति के प्रमाण अभी तपस्या के कदम को सहज और तीव्रगति से आगे बढ़ाओ। कोई भी संकल्प बुद्धि में आता है तो संकल्प है बीज, वाचा और कर्मणा बीज का विस्तार है, अगर संकल्प अर्थात् बीज को त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित होकर चेक करो, शक्तिशाली बनाओ तो वाणी और कर्म में स्वत: ही सहज सफलता है ही है।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 20-5-13 *मधुबन*

"लगन की अग्नि ऐसी हो जो देह से न्यारा रहें, कोई भी पुराना हिसाब-किताब ना रहे, विकर्म विनाश हो जायें" (दादी जानकी)

आज बाबा ने मुरली में 3-4 बारी कहा कि शरीर से डिटैच हो करके मेरे को याद करो। बाबा मैं आपके ऊपर बलिहार जाऊं, तो मैं पहले बलिहार होंगी या बाबा मेरे ऊपर पहले होगा? वह भी कहता है डिटैच हो करके मेरे को याद करो फिर मैं बलिहार जाऊं। तो बाबा थोड़ेही बलिहार जायेगा! मुझे बलिहार जाना है। हर एक अपने से पूछे इतना याद में रहते हैं जो मेरे विकर्म विनाश हो जाएं। इसके लिए कोई भी बात में न जायें, अगर बुद्धि कहाँ भी जाती है या कोई मुझे खींचता है तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। याद इतनी परिपक्व नहीं होगी क्योंकि 63 जन्मों के विकर्मों का खाता जमा है। भले हम भगत आत्मायें थे, परन्तु अब हम ज्ञानी आत्मायें हैं, विकर्म क्या है, जिसको विनाश करने के लिए लगन की अग्नि हो, जो फ्री हो जायें। दुनिया है पराई, पराई से क्या प्रीत!

कर्म-सन्यासी नहीं हैं, हम कर्मयोगी हैं तो इतनी ताकत हो, कोई भी पुराने हिसाब किताब न रहें। इसके लिए देह से इतनी न्यारी रहूँ फिर श्रेष्ठ कर्म करने के लिए शक्ति हो। लगन की अग्नि अन्दर ही अन्दर मुझ आत्मा को शान्त कर देती है। इतनी शान्ति जो मैं कर्म सम्बन्ध में आते भी शान्ति की शक्ति से चलूँ। पहले कर्म कैसे थे और अभी कैसे हैं यह निशानी है बदलने की। कोई भी बन्धन नहीं है। मुख्य बात कोई-कोई पुराने, पुराने बाबा के बच्चे याद आते हैं, जिन्होंने इतना पुरुषार्थ नहीं किया है, साधारण बातें, साधारण चलन चल रहे हैं... रियलाइजेशन नहीं है इसलिए साधारण हैं। साधारणता कभी व्यर्थ में भी ले जायेगी परन्तु विकर्म विनाश की निशानी यह है, कभी व्यर्थ में तो नहीं पर साधारणता में भी नहीं रहेंगे, सदा श्रेष्ठ। इतने सब बाबा के प्यारे बच्चों को मैं सम्पन्न देखना चाहती हूँ, यही मेरा कारोबार है। पहले बलिहार जाऊं, बाबा मैं आप पर बलिहार हूँ, आप कितने मीठे हो, कितने प्यारे हो।

बाबा के साथ कनेक्शन, रिलेशन में लाया है। सेवा तो निमित्त है तो प्लीज़ सेवा में बिजी न हो जाओ। बाबा को देखके कभी नहीं लगा कि बाबा बहुत बिजी है, बाबा ने कभी नहीं कहा मैं बिजी हूँ। मेरे को कोई कहता है ना आप बिजी हैं तो मुझे इनसल्ट फील होता है। कराने वाला करा रहा है, मेरे को एक निमित्त बनाया है, बाकी अनेकों से करा रहा है। यह सिर्फ कर्मबन्धन, हिसाब किताब चुक्तू किया, अच्छा हुआ आगे के लिए श्रेष्ठ कर्म करने का भाग्य मिला। कर्म बन्धन कोई नहीं

है, एकदम लगता है बाबा के लायक बच्चा हूँ। बाबा ने मेरे ऊपर मेहनत नहीं की है पर अपनी छाप लगाई है। विकर्म विनाश की निशानी यह भी है कि सुख की दुनिया में जाने के पहले शान्तिधाम में रहने के आदती बन गये, ये नेचुरल है। इसके सिवाए कहीं और बिजी होना माना हिसाब-किताब। जितना ज्ञान की गहराई में जाओ, तो उतना त्याग वृत्ति, अनासक्त रहेंगे, बुद्धि में कोई हलचल नहीं। थोड़ी भी बुद्धि में हलचल हुई माना हिसाब-किताब बना। तो कोई चिंतन वा चिंता नहीं हो, इतना उपराम वृत्ति हो। कोई भी बात हो जाये, हिम्मत ने हार खाई तो बाबा अकेला क्या करेगा?

शरीर को भी कुछ होता है तो बाबा की याद दिलाने के लिए हो, जो हमारी अन्त मते अन्य को प्रेरणा देने वाली हो। तो यह जो हमारा आपस में प्यार है उसकी कदर हो, तो बाबा सब बच्चों के लिए बांहें पसार करके खड़ा है। ऐसा फट से किसी को वायब्रेशन दे करके खड़ा कर देवें। जिससे ऐसी-ऐसी चात्रक आत्मायें निकल रही हैं। यह है सेवा। पहले चात्रक बनें फिर पारस के संग में लोहा भी सोना बन जाता है। तो हरेक अपने को समझे मैं चात्रक समान हूँ? अच्छा।

ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास

"सच्चा सोना बनना है तो अन्तर्मुखी बनो, कभी चलायमान डोलायमान नहीं होना"

तीन बारी ओम् शान्ति बोलने के बिगर शान्ति नहीं आती है। पहली ओम् शान्ति शान्ति, दूसरी शक्ति, तीसरा हर्षितमुख। शान्ति की शक्ति से सदा हर्षित रहने का भाग्य बन जाता है।

ड्रामा अनुसार कहें या भगवान के प्लान अनुसार कहें गॉड्स प्लान, उसके पास प्लान है परन्तु उसके लिए बुद्धि को सिर्फ प्लेन रखो। क्या होगा, कैसे होगा इस आवाज़ में आना ही नहीं है। बाबा ने हमको हमारा परिचय दिया है कि हे आत्मा तुम कौन? मन को कहो तुम शान्त रहो। मन शान्त है तो जो वो सुनाता है वो दिल में लग जाता है यानि कि वो बात बुद्धि में समझ आती है, तो याद रहती है। तो जिसके साथ दिल लगती है, जिन्हें दिल्लगी की बातें करना आता है, उन्हें याद में रहना सहज होता है। सर्वशक्तिवान से दिल लग गई तो एकाग्रता की शक्ति आ जायेगी। जिसको सच्चा सोना बनना है, वह सच्चाई को धारण कर ले, इसमें बहुत ताकत है। ईश्वर सत्य है, उसकी नॉलेज सत्य है, वह सतयुग स्थापन करता है, वहाँ चलने के लिए हमको ऐसा बना रहा है। इसके लिए बेदागी हीरा बनने के लिए गहराई में जाओ। हीरे को सच्चे सोने के जेवर में ही रखा जाता है। ऐसा मैं वैल्युबूल जेवर पहनूँ, अपने को दिव्य गुणों से ऐसा श्रृंगार करूँ जो हरेक पूछे यह किसके बच्चे हैं? बाबा का बच्चा हूँ तो उन जैसा बनना है। सी फादर, फॉलो फादर। सच्चा सोना बनना है तो अन्तर्मुखी होना है। अन्तर्मुखी वाला कभी कहीं चलायमान, डोलायमान नहीं होता है। मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई तब कहेंगे सच्चा क्योंकि सच छिपता नहीं है, अपने आप सच की जय है तो सच बन जाओ ना। सत्यमेव जयते, यह अनुभव है।

सच्चा बनने से परखने और निर्णय करने की शक्ति आ जाती है। और भी शक्तियाँ समय पर काम करती हैं। सहनशक्ति भी अपने आप काम करती रहेगी। निर्णय शक्ति सब शक्तियों में महान है। साक्षी अवस्था वाला कभी किसी की कमजोरी नहीं देखेगा, जो उसको देखेगा उसकी कमी चली जायेगी। साक्षी रहने वाले की अन्दर की वृत्ति में होता है कि इसका भला हो तो उसका भला हो जाता है। लेकिन अभिमान बाबा और परिवार से दूर कर देता है, यह गलती की सजा हो जाती है। स्वमान की सीट पर बैठ जाओ, बाबा, यज्ञ, परिवार के प्रति प्यार हो, रिगार्ड हो। जब स्वमान में रहते हैं तो बाबा को अच्छा लगता है। जो मेरे को देखे बाबा दिखाई पड़े। कोई भी बात सोचा, देखा रिपीट किया तो वो कोई काम का नहीं है इसलिए लगन चाहिए मैं बाबा के काम की बनूँ। बाबा जो काम बताये, जिस घड़ी बताये उसी समय करने के लिए तैयार रहें।

पवित्रता की गहराई में जाओ, कभी साधारण ख्याल भी न आवे। साधारण ख्याल लम्बा समय चलेगा, श्रेष्ठ एक बारी एक्यूरेट, इससे जो भी काम हाथ में लेंगे वो हो गया, बाबा ने

किया कराया, यह अनुभव होगा क्योंकि प्युरिटी में सच्चाई साथ देती है, प्युरिटी में सच्चाई अपने आप काम करती है। प्युरिटी और सच्चाई दोनों को मिलाते चलते चलो तो कभी भी अधैर्य नहीं होंगे। तो पवित्रता, सत्यता, धैर्यता, नम्रता फिर मधुरता। उसके जो बोल हैं ना वो कभी भूलेंगे नहीं। ऐसा एवररेडी, एक्यूरेट बनना है, अचानक कुछ भी हो जाये। तो सारे ज्ञान का, योग का, धारणा और सेवा का इसेन्स यह है कि चारों सबजेक्ट में एक्यूरेट हों, यह एक नेचुरल हमारी लाइफ हो, यह मेरी भावना है कि हर एक की स्थिति ऐसी मास्टर सर्वशक्तिवान की बनें।

तीसरा क्लास

"अन्त मते निमित्त मात्र शरीर में बैठे बाबा सब तेरा है, तू है मेरा, मेरी भावना है अन्त मते सबकी ऐसी हो"

बाबा कहता है साक्षी होके देखो तो सब कुछ ठीक है। साक्षी होके देखने का अभ्यास चाहिए। एक सेकेण्ड में साक्षी बनो तो फील होता है बाबा साथी है। ड्रामा का ज्ञान कैसे बाबा ने शुरू किया, वन्डरफुल। हम लोगों को अपना परिचय दिया, तुम आत्मा हो, यह दृष्टि से परिचय दिया, नहीं तो आत्मा समझना सहज नहीं है। सभी कुछ करके अपने आप छिपा दिया। तो अवस्था ऐसी हो जो देखते या सम्पर्क में आते बाबा याद आये। हरेक अपने आपको साक्षी हो करके देखो बाबा साथी है तो हमारे संग से औरों को बल मिलता है। एक सोते हुए को जगाना सहज है, लेकिन जो जागे हैं फिर सो जाते हैं उनको जगाना सहज नहीं है। चलते-चलते माया अपनी लोरी देके नींद करा देती है। माया मासी है वह छोड़ती नहीं है। बाबा का घर सो अपने दाता का घर है, तो कभी किसी से कुछ मांगना नहीं पड़ता है। बाबा कैसे हरेक को प्यार करता है, बाबा का प्यार हमको प्रेम-स्वरूप बनाता है। ज्ञान-स्वरूप, प्रेम-स्वरूप, आनंद-स्वरूप...। क्योंकि ज्ञान स्वरूप में लाना है, जो बाबा का प्यार है, प्रेम हमारे स्वरूप में है, सदा ही प्रेम-स्वरूप हो क्योंकि जब बाबा के प्यार का अनुभव होता है तो वो प्रेम-स्वरूप में आ जाता है।

ज्ञान सत्य है, सच्चाई प्रेम-स्वरूप बनाती है। बाबा रूह को प्यार कर रहा है, पर कोई जिस्म को प्यार कर रहा है तो बाबा उस समय साक्षी हो जाता है। जिस्मानी प्यार धोखा देने वाला है, रूहानी प्यार धोखे से बचाने वाला है। कोई आत्मायें होती हैं, कभी कोई कैसी भी परिस्थिति हो पर वह उसे पार कर देगा, यह है बाबा से रूहानी प्यार की शक्ति खींचने का प्रैक्टिकल प्रमाण। बात पार हो जायेगी, पास हो जायेंगे। बात रहने वाली नहीं है, वो तो चली गयी, परन्तु जो चली गयी मैं उसे सोचती रहूं, तो उस बात के परवश हो जायेंगे। वह बात भूत बना देती है। जैसे भूत प्रवेश हो जाता है, ऐसे बात प्रवेश हो गई फिर वह चिंतन छूटता नहीं है।

जैसे ब्रह्माबाबा में शिवबाबा की प्रवेशता है, मेरे में किसकी है? किसी चीज़ को भी मेरा कहा तो भूत आया। तेरा कहा तो भूत भाग गया। बाबा की बातें भूतों को भगाने वाली हैं इसलिए बाबा की अच्छी याद रहे। बाबा को याद करो क्योंकि बाबा की बातों में ताकत है।

मैं हर एक का कम्पलीट रूप देखना चाहती हूँ, कोई कमी न हो। एक दो की विशेषता को देखो, सब एक जैसे नहीं होंगे, हरेक का पार्ट अपना है। ऐसे नहीं कहो कि इनको प्यार मिलता है, मेरे को नहीं मिलता है या इनसे तो यह अच्छी है। देखते हैं इनसे यह अच्छी है, तो कहाँ है ड्रामा की नॉलेज? जिसमें ड्रामा की नॉलेज नहीं है तो नॉलेज देने वाले की याद कैसे रहेगी? बाबा को याद करना हो तो ड्रामा की नॉलेज पक्की हो। जिसने जितना बाबा के साथ अपना सम्बन्ध बनाके रखा है, उतना वह अपना यादगार बनाके रखा है। हरेक का पार्ट अपना है, पर मैं कम नहीं हूँ। बाबा भी कहे बच्ची काम की है, जो मैं कहता हूँ ना, उस डायरेक्शन्स पर चलती है। सेवा मस्ताना बना देती है, कोई कहेंगे पागल हुआ है, हाँ पागल है, किसके पीछे पागल है? कौन क्या कहेंगे उसकी कोई परवाह नहीं, तो यह है मस्त फकीर। पर अभी स्थिति भी ऐसी हो जो अन्त मते निमित्त मात्र शरीर में बैठे हैं, बाबा ने बिठाया है, बाकी मेरा कुछ है ही नहीं। सब है तेरा, तू है मेरा। तो मेरी भावना है अन्त मते सबकी ऐसी हो। शरीर तो हरेक को

छोड़ना है आज नहीं तो कल, पर कैसे छोड़ना है! मैं नहीं समझती हूँ, मेरे जैसा किसको फिकर है, है किसी को ऐसा फिकर? फखुर भी है, फिकर भी है। कल्प पहले भी ऐसा थी, अभी भी बनना ही है ना, मुझे यह फखुर है इसमें ब्रह्मा बाबा को कॉपी करना राइट है। बाबा देह में है, पर देह से न्यारा कैसे है? अच्छी तरह से ऑखें खोलके, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, स्वदर्शन चक्रधारी बनके बाबा को देखो, तो कोई न कोई जो मोह माया अन्दर सूक्ष्म पकड़के बैठी है, कहाँ न कहाँ अब इससे छुड़ाओ अपने को। परिवर्तन करना है, तो सी फादर, फॉलो फादर का रट लगाओ इसलिए और कुछ और दिखाई नहीं पड़ता है। बाबा कैसे देखता है सबको? कॉपी करो सिर्फ बैठा है, हाथ भी ऐसे नहीं करता है दृष्टि दे रहा है। अच्छा - ओम् शान्ति।

17-9-15

"सब प्राब्लम्स बाबा को देकर, सदा खुश रहो, दिलाराम को दिल में बिठा लो"

(गुल्जार दादी)

सभी बाबा की यादों में ही खोये हुए हैं। सबके दिल में मीठा बाबा है। ऐसे ह ना! क्योंकि मीठा बाबा नहीं दिल में होगा तो और क्या होगा? हमारे दिल का दिलाराम तो मीठा बाबा ही है ना। हरेक यही कहता कि मेरा बाबा। सभी ने बाबा को मेरा बनाया है ना! जितना बाबा में मेरापन लायेंगे तो सब मैलापन निकल जायेगा। कितने लोग याद आते हैं, किसको करो याद, किसको भूल जाओ लेकिन मेरा बाबा तो मेरे दिल में है ही, याद भी है ही। तो बस जब हरेक के दिल में बाबा आ गया तो समझो विजयी बन गये। सारी मेहनत किसलिये की है? बाबा की याद सारा दिन रहे तो इसकी खुशी है कि बाबा ही दिल में है। गलती से आ भी जाये तो उसको ठहरने नहीं देंगे। पाण्डवों का क्या हाल है? आपके दिल में भी मेरा बाबा ही है ना। बाबा में मेरापन आ गया ना। मेरा बाबा कहते हैं तो बाबा का परिचय याद आता है ना। है कौन? जिसको दुनिया याद करती है, दुनिया याद करती है लेकिन मेरे तो दिल में आ गया। मातायें आ गया है ना! दिल का दिलाराम कौन? मेरा बाबा। तो बहुत अच्छा, आज चैतन्य में सम्मुख क्लास के भाई बहनों को देख खुशी हो रही है। नहीं तो टी.वी. में तो देखते ही रहते हैं। (हमें भी बहुत खुशी हो रही है) लेकिन यह खुशी सदा रहे, थोड़ी-सी बात में खुशी नहीं चली जायें। कोई भी आके देखे, हमारी सभा में से सब खुशनसीब दिखाई देवें? सभी के दिल में उठे यह कौन? तो याद कौन आयेगा - मेरा बाबा। बस, मेरा बाबा के सिवाए और है कौन! अभी तो पक्का हो गया है ना। सभी मुस्कराते ऐसा हैं, जो सबकही शक्ल से दिखाई देता है कि कोई है इनके दिल में। ऐसे है ना। जब दिल में यह आता है मेरा बाबा तो शक्ल ही बदल जाती है। सबकी शक्लें ऐसी मुस्कराती हैं जो फोटो निकालो तो बहुत अच्छा लगता है क्योंकि बाबा आ गया दिल में, कोई साधारण थोड़ेही है। भगवान आ गया मेरे दिल में! कम बात थोड़ेही है। तो सब खुश? खुशी कभी नहीं गँवाना क्योंकि ज्ञान की प्राप्ति है ही खुशी। कोई भी बात हो जाये, अब दुनिया में रहते हैं तो दुनिया की बातें तो आयेंगी ही ना लेकिन हमारी दिल बाबा की है। यह पक्का है ना, तो अभी हाथ क्या उठवायें, दिल ही बोल रही है। तो खुशी कभी नहीं छोड़ना। हमेशा आपकी शक्ल ऐसे खुश दिखाई दे जो देखने से ही समझें यह कोई न्यारे दिखाई देते हैं। ऐसे हैं? तो हमें मिला कौन है! मेरा बाबा। तो सदा खुश, सदा। अभी भगवान मिला और क्या चाहिए? सब मिला ना। सबके चेहरे सदा खुश हैं ना कि कोई प्रॉब्लम है? आती है थोड़ी-थोड़ी प्रॉब्लम लेकिन प्रॉब्लम जो है ना वो बाबा को दे दो, बस। देना तो सहज है, लेना थोड़ा मुश्किल है लेकिन देना तो सहज होता है ना। जब मेरा बाबा हो गया, तो सब मेरे में समा गये। सभी खुश, खुश है! सदा खुश या कभी कभी? सदा। क्योंकि हमारे सिवाए और खुशी जायेगी कहाँ? उसका स्थान हम ही तो हैं। जिन्होंने खुशी को अपना बनाया तो हम खुश नहीं होंगे तो कौन होगा? प्रॉब्लम सारी बाबा को दे दी ना, तो सब खुश। अगर कहे खुशी पूछना हो तो कहेंगे हमसे पूछो। तो खुश रहना है और खुशी बाँटनी है। अभी भी कोई कोई खुश नहीं रहते हैं, दुनिया में कितने पड़े हैं। हाँ, ऐसे ही नहीं करते हैं पर कोशिश तो करते हैं ना। तो सभी खुश रहना और खुशी बांटना। अच्छा।

दूसरा क्लास –

सबके नयनों में बाबा बसा हुआ है ना! सारा दिन बाबा की रहता है या और कोई नयनों में आ जाता है? जब कोई झंझट में फंसते हो तब नयनों में कौन रहता है? कुछ भी परिस्थिति आवे, हम न्यारे और प्यारे कमल पुष्प समान रहें। पानी में रहते एक बूँद भी प्रभाव नहीं डाले। ऐसे रहना आता है ना? पक्का? कितना पक्का! बहुत पक्का? देखना, आज सारा दिन में कितना पक्का रहा? नयनों में बाबा बस रहा है। जैसे गीत में सुना मेरे नयनों में बाबा ... ऐसे मेरी दिल सारा दिन बोले और प्रैक्टिकल में अनुभव हो। नयनों में बाबा, जहाँ भी चलो, जो भी सेवा (कर्म) करो बाबा ही बाबा दिखाई दे। मेरा है ना, बाबा कहता है इस मेरा (शरीर) को भूलो, अभी तक भी शरीर का भान तो आता है ना, कितना टाइम हो गया! इसीलिए बाबा कहते जैसे शरीर का भान भूलता नहीं है, चाहो तो भी नहीं भूलता है ऐसे बाबा दिल में मेरे बैठा है, यह नहीं भूलें। जब और बातें नहीं भूलती तो बाबा क्यों भूल जाता है? बाबा को तो दिल में बिठाना है ना। कोई भी बात हुई बाबा... हमारा साथी आ गया। आता है या नहीं! देरी तो नहीं लगाता? नहीं। है ही बाबा मेरे लिए, भले कितना भी बड़ा परिवार है लेकिन बाबा सबके लिए एवररेडी। बाबा कहो, बाबा आ गया। बस, बाबा ही बाबा और क्या है!

और बाबा को सामने देखो तो ऐसे लगता है, जन्म-जन्म का प्यार पूरा हो जाता है। तो ऐसे बाबा को अच्छी तरह से बांधके रखना, बांधना आता है? गोपियों का गायन हमारा है, अभी हम सुन रहे हैं। कमाल तो यह है कि हमारा गायन हम ही देख रहे हैं हाँ, ऐसा लिखा है। गोप-गोपियाँ दोनों का गायन है। माताओं में थोड़ा प्यार ज्यादा होता है इसलिए गोपियों का ज्यादा लिख देते हैं। बाकी है तो गोप-गोपियाँ दोनों का गायन। क्योंकि दोनों के बिना काम नहीं चलेगा। तो आज नोट करना सारे दिन में खुशी कितना बारी गयी? कोई-न-कोइ बात आ जाती है ना! आज कोई भी बात आवे डोन्ट केयर। हो सकता है ना। डोन्ट केयर, अरे! क्या है? बाबा के आगे यह है क्या? छोटी-छोटी चीज़ें। तो आज का दिन 16 कला सम्पन्न रहना है, 15 भी नहीं। कल पूछना 15 कला रहे या 14 या क्या हुआ? कोई खिटपिट होगी तो फिर 8 कला हो जायेगी इसलिए कुछ भी हो जाये हमारा बाबा हमारे साथ है। बाबा के आगे बात क्या है, दिल से बाबा कहा बात गयी। तो सभी खुश? कितना खुश! फुल खुश। मातायें खुश, भाई खुश... वाह, ऐसे ही सारा दिन मन की ताली बजती रहे। हम बाबा के साथ हैं। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"स्वीट बाबा के स्वीट बच्चे अपनी स्वीट स्थिति बनाओ, मायाजीत, व्यर्थ संकल्प जीत विजयी बनो"

1) हम सब बाबा के समर्पित बच्चे बैठे हैं, समर्पित माना न तो मनमत चाहिए, न परमत चाहिए। समर्पण माना कदम-कदम बाबा की जो श्रीमत है, उसका ध्यान रख चलना। यह भी जो कभी कहते हैं कि हमारे व्यर्थ संकल्प चलते हैं... तो जब हम समर्पण हैं तो संकल्प भी बिल्कुल श्रेष्ठ हो, न कि व्यर्थ क्योंकि समर्पण माना समर्थ संकल्प। तो जब संकल्प भी समर्थ हों, स्थिति भी हमारी इतनी ही ऊंची समर्पणमय वाली हो। कभी यह सूक्ष्म में भी संकल्प न आवे जो यह कहो कि बाबा मेरे पास माया बहुत आती है। जब जानते हो कि यह माया है तो जानने वाला नॉलेजफुल अगर कहे कि मेरे पास माया आती है, तो वे समर्पण नहीं हुए। हम सभी का रिकार्ड हो, समर्पण माना संकल्प भी मायाजीत के हो। हरेक खुद से पूछे मैं मायाजीत हूँ या माया के वश होता हूँ? अगर माया आती है तो फिर बाबा के प्रति समर्पित कैसे हुए?

2) समर्पित माना कर्म, अकर्म, विकर्म की गुह्यगति को जानने वाले अर्थात् विजयी। जानने वाला अगर कहे कि मेरे से आज यह विकर्म हो गया, भूल हो गई तो उस विकर्म का कितना बड़ा दण्ड हो जाता है, जिस पर कहा जाता है ज्ञानी तू आत्मा को एक भूल का 100 गुणा दण्ड मिलता है। हम सब ज्ञानी तू आत्मायें, श्रीमत पर चलने वाले यहाँ बैठे हैं। श्रीमत अर्थात् सदा यह याद रहे कि हम तो निमित्त मात्र हैं, करने कराने वाला बाबा है। निमित्त मात्र की स्थिति स्वयं को माया से बहुत-बहुत

सेफ रखती है। जैसे बाबा ने कहा निरहंकारी बनो, तो निमित्त मात्र समझकर चलने से निरहंकारी स्थिति का अनुभव सहज होता है। निमित्त पन का भाव ही अहम् पर विजय दिलाता है अर्थात् निरंहकारी बना देता है। मैं मैं खत्म हो जाती है। बाबा, बाबा, बाबा आता। तो जहाँ बाबा बाबा आता वहाँ हर कर्म सहज अकर्म हो जाता। जहाँ अहम् आता वहाँ कर्म का खाता बनता। बाबा तो करने कराने वाला हुआ, हम निमित्त हैं। तो जो कर्मों का हिसाब लेना देना है, वह चुक्तू हो जाता है इसलिए इसका नाम है समर्पण। न कोई कर्म मेरा है, न मैं करता हूँ। बाबा कराता है, जो बाबा कहे सो करना है।

3) जब बाबा कराता है तो फिर जो बीच में कहा माया आती, वह माया खत्म हो जाती है। कई पूछते हैं व्यर्थ संकल्प बहुत आते हैं, क्या करूँ? तो पहले हम उनको कहते अपने से पूछो कि क्या मैं समर्पण हूँ? जब हूँ ही समर्पण तो मेरे पास माया के संकल्प विकल्प भी क्यों आवें, जो कर्म में आऊं। तो न ऐसा कोई कर्म होगा, न विकर्म होगा, न माया आयेगी, सहज मायाजीत बन जायेंगे। ऐसे मायाजीत रहने वाला सदा अपने कर्मों से दूसरों को भी प्रेरणा देगा क्योंकि उनको यह ध्यान है जैसा कर्म मैं करुँगा मुझे देख दूसरे करेंगे। तो अगर हम सोचें कि हम निमित्त हैं - बाबा के हजारों बच्चों को अपनी धारणा से प्रेरणा देने के, तो समझो हम समर्पित हैं। अगर अभी भी माया है तो वह खुद भी दोषी बनता, दूसरों को भी ऐसा कर्म करने की प्रेरणा दे देता तो उनका भी डबल दोषी बनता है इसलिए हम सब जो भी बाबा की सेवा पर हैं, हर एक जिम्मेदार हैं अनेकों को प्रेरणा देने के।

4) बाबा ने हमें काम दिया है - मायाजीत बनने के लिए निराकारी स्थिति बनाओ। फिर निरंहकारी और निर्विकारी बनो...। तो हरेक को अगर मेहनत करनी है, पुरुषार्थ करना है तो कर्मातीत बनने के लिए हमें निराकारी स्थिति की बहुत मेहनत करनी है क्योंकि निराकारी स्थिति ही हमें सहज कर्मातीत बनायेगी। निराकारी स्थिति के अन्दर हमारे तीन बड़े राज़ हैं। एक तो निराकारी स्थिति स्वयं के भी संस्कारों पर सहज विजयी बना देती है। दूसरा - हमारी निराकारी स्थिति वायुमण्डल, वातावरण में भी शान्ति की शक्ति फैलाती है। तीसरा - निराकारी स्थिति हमें सम्पूर्ण निर्विकारी बना देती है। तो यह स्थिति कर्म, विकर्म पर विजय प्राप्त कराके अकर्मी बना देती है। तो हम सभी को अपने स्थिति का रिकॉर्ड रखना है कि बाबा हमने व्यर्थ संकल्पों पर भी विजय पाई है। यह नहीं, बाबा पुरुषार्थ तो करते हैं परन्तु फिर भी व्यर्थ संकल्प बहुत आते हैं। अगर ऐसी स्थिति है तो समर्पण नहीं है। वह श्रीमत पर नहीं, मनमत पर हैं। तो जब हमें पक्का निश्चय है कि हमें बाबा मिला है तो निश्चय बुद्धि विजयन्ति। यह नहीं निश्चय बुद्धि आधे विजयन्ति। नहीं। निश्चय बुद्धि विजयन्ति, किस पर विजयन्ति? अपने संकल्पों पर माया पर विजयी।

5) निश्चय बुद्धि है तो सब पर विजयी है। यह नहीं कि एक सबजेक्ट में विजयी बनो तो दूसरी सबजेक्ट में फेल रहो, उनको कोई पास मार्क्स नहीं मिलेगी। उस कॉलेज में भी जो सब सबजेक्ट में मार्क्स फुल लेता वही पास होता है। तो हमारी भी जो सबजेक्ट्स हैं - वह हैं ही मन्सा, वाचा, कर्मणा.. भल लौकिक में कई जवाबदारियाँ हों, परन्तु जब पक्का निश्चय किया मैं बाबा का, बाबा मेरा। तो अगर एक भी कोई राँग कर्म होता, भूल होती तो पत (इज्जत) किसकी गँवाते? बाबा की। अरे! यह कहते हम तो ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी हैं लेकिन देखो इनकी चाल, यह देखो इनकी रिपोर्ट...। तो किसकी इज्जत गई? बापदादा की। तो आप सभी बाबा के बच्चे बैठे हो, अगर हम पूछें निश्चय बुद्धि हो तो सब हाथ उठायेंगे। अगर पूछे संशय बुद्धि हो तो एक भी हाथ नहीं उठायेगा। तो निश्चय बुद्धि माना विजयी। विजयी माना अपनी स्थिति बाप समान बनाना। बाप समान स्थिति माना ही हम बाबा के समान निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी हैं। कभी आपने सुना कि बाबा कहे मेरे पास आज यह माया आई, .. वह तो बाबा बच्चों की दिल लेते कहते बच्चे जो तूफान तुम्हारे पास आते वह पहले बाबा के पास आते। हम कहते थे बाबा आपको कौनसा तूफान आया जरा बताओ... तो मुस्कराते थे। कोई तूफान नहीं। तो हम बच्चे जब बाबा के पक्के निश्चय वाले हैं तो यह कभी भी नहीं कहें कि हमारे पास माया आई और माया ने हमारे पर विजय पाई और हमसे कोई-न-कोई विकर्म कराया। तो फिर बाबा की जो आज्ञा है निर्विकारी बनो, निरंहकारी बनो वह तो नहीं हुए। अगर हमें निराकारी, निर्विकारी रहना है तो सूक्ष्म संकल्प में भी माया नहीं आवे अर्थात् कोई भी अपवित्र कर्म न हो। अपवित्र कर्म है, कुछ भी है तो जरुर बुद्धि में संकल्प विकल्प होंगे। अगर संकल्प विकल्प चलते तो फिर वह दूसरों की भी ऐसी व्यर्थ स्थिति बनाने के निमित्त बनते। अच्छा।